जाति, गतिशीलता एवं शिक्षा

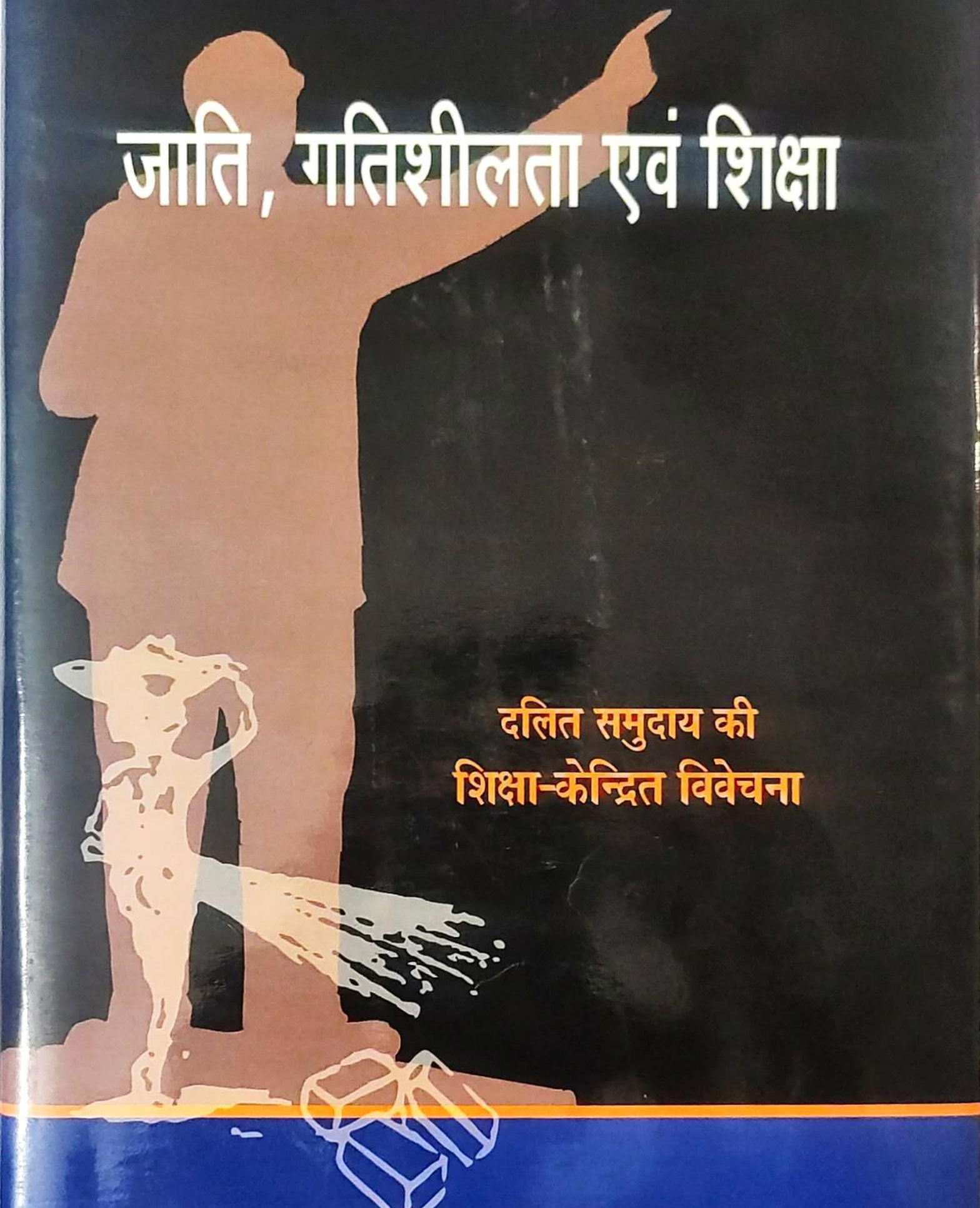

दलित समुदाय की
शिक्षा-केन्द्रित विवेचना

संजय शर्मा

इस अध्ययन पर प्रो. अनिल सद्गोपाल की टिप्पणी...

शिक्षा संस्थाओं में विद्यालय एवं इसके भीतर कई विषयों तथा समस्याओं के सन्दर्भ में बहुआयामी शोध हुए है किन्तु विद्यालय की चारदीवारी से बाहर निकल कर किसी समुदाय विशेष के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने में शिक्षा की समस्याओं, प्रकृति एवं विस्तार को समझने की दिशा में होने वाला कोई भी अकादमिक कार्य सहज ही ध्यान आकर्षित करता है। आनुभाविक तथ्यों एवं सैद्धांतिकी के आधार पर फलित "सामाजिक गतिशीलता एवं शिक्षा" का यह शोधपरक कार्य वर्णवादी भारतीय समाज के अंतिम पदानुक्रम पर स्थित वाल्मीकि समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संदर्भों/सरोकारों को समझने के लिए एक अंतर्दृष्टि देता है।

शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्य करते हुए शिक्षा विषयक विभिन्न अनुसन्धान कार्यों को गहनता से देखने एवं जानने का अवसर मिला किन्तु शिक्षा के किसी मुद्दें को किसी समुदाय विशेष के सन्दर्भ में गहनता एवं व्यापकता में अंतःपीढ़ीगत दृष्टि से समझने की दिशा में कम ही चिंताए देखी गई।

वाल्मीकि समुदाय में शिक्षा की स्थिति-स्तर एवं उसके कारण समुदाय विशेष में हो रहे सामाजिक-व्यावसायिक एवं राजनैतिक बदलाव को समझने के लिए यह अध्ययन एक वैचारिक आधार प्रदान करता है।

यश
यश पब्लिकेशंस, दिल्ली

ISBN 978-93-83237-42-5

आवरण : शशिकान्त